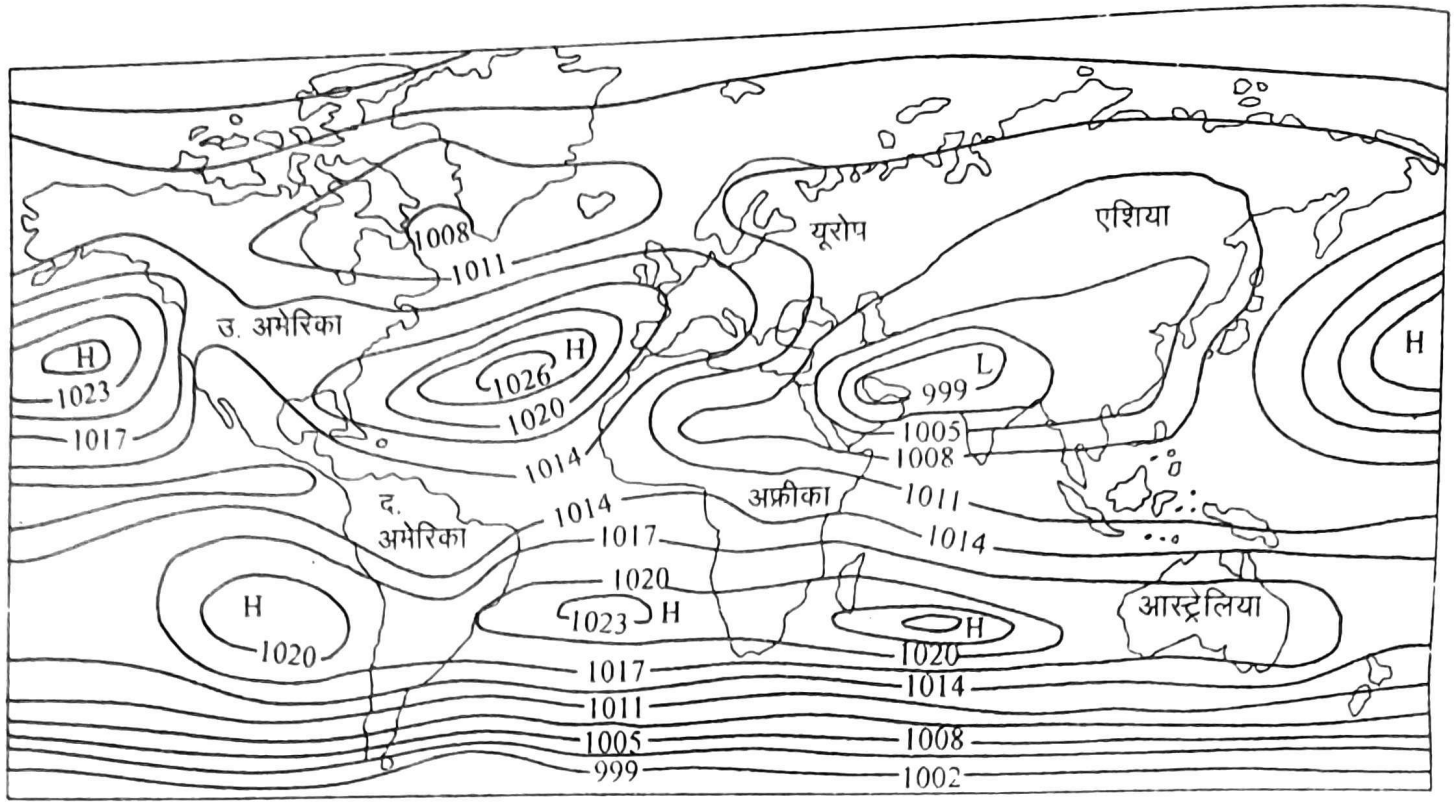

चित्र 35.3 : जुलाई की समदाब रेखाएं।

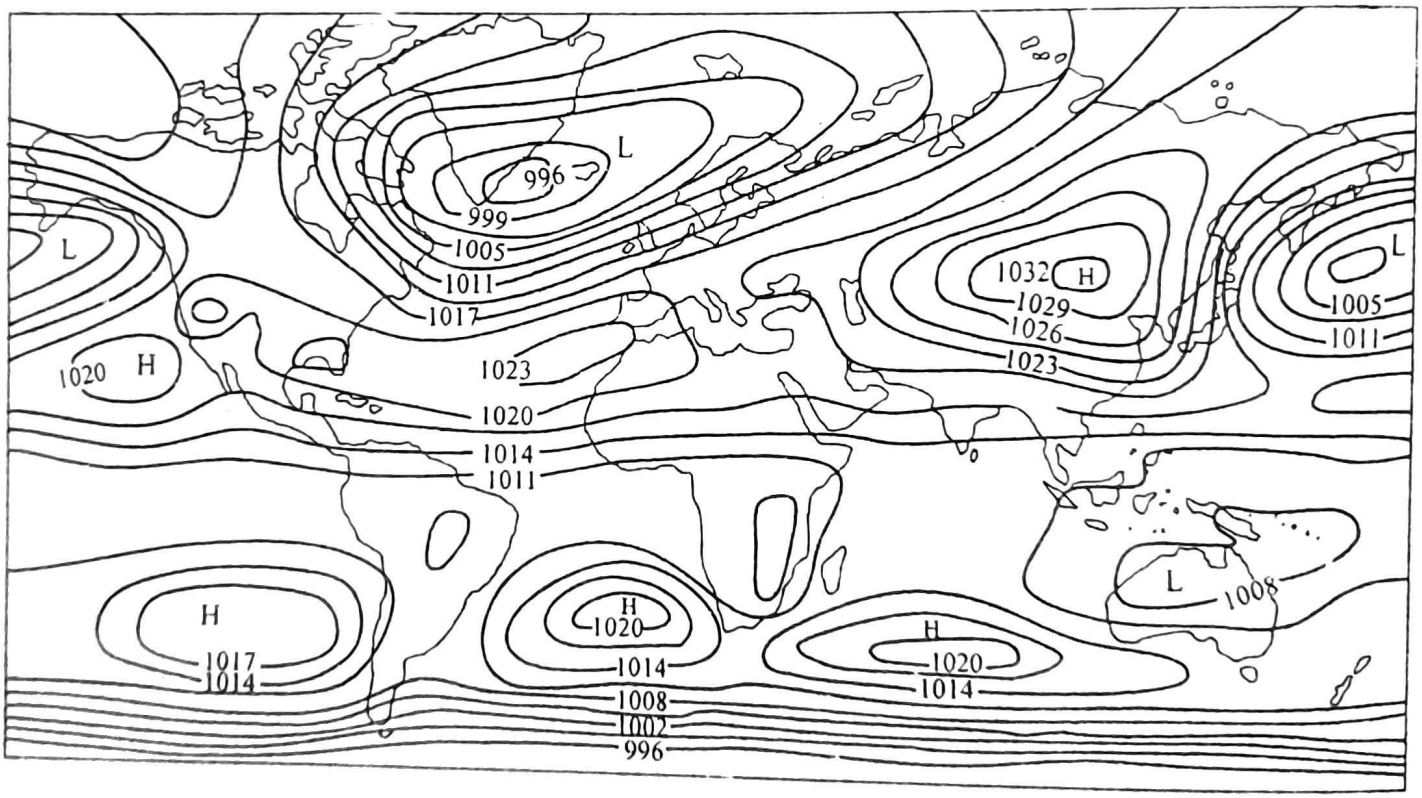

चित्र 35.4 : जनवरी की समदाब रेखाएं।

3. उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटी

इस पेटी का विस्तार दोनों गोलार्द्धों में 60^0–65^0 अक्षांशों के बीच पाया जाता है। वर्षभर तापमान कम होने के बावजूद यहां निम्न वायुदाब मिलता है। स्पष्ट है कि इस कम वायुदाब का तापमान से कोई सम्बन्ध नहीं है। वास्तव में पृथ्वी की घूर्णन गति (rotation) के कारण इन अक्षांशों से वायु फैलकर

स्थानान्तरित हो जाती है, जिस कारण गतिजन्य कम वायुदाब का आविर्भाव होता है। यद्यपि इस प्रक्रिया का प्रभाव सबसे अधिक विषुवत रेखा पर होना चाहिए, परन्तु वहाँ पर तापमान इतना अधिक हो जाता है कि पृथ्वी के घूर्णन के कारण वायु के फैलने का कारण कमजोर पड़ जाता है तथा वहाँ पर निम्न वायुदाब हो जाता है।

4. ध्रुवीय उच्च वायुदाब पेटी

ध्रुवों पर तथा समीपी क्षेत्रों में अत्यन्त शीत के कारण वायुदाब स्वभावत: ऊँचा हो जाता है। अत: यह उच्च वायुदाब तापजन्य होता है।

35.3 वायुदाब की पेटियों की स्थितियों में परिवर्तन

यदि पृथ्वी अपनी जगह पर स्थिर होती तो वायुदाब की पेटियों की स्थिति भिन्न होती परन्तु सूर्य के उत्तरायण के समय सूर्य की किरणें उत्तरी गोलार्द्ध में सीधी पड़ती हैं, जिस कारण ध्रुवीय उच्च वायुदाब की पेटी के अलावा सभी वायुदाब की पेटियाँ उत्तर की ओर खिसक जाती हैं। इसके विपरीत शीतकाल में सूर्य के दक्षिणायन के समय सूर्य की किरणें मकर रेखा पर लम्बवत् होती हैं, अत: सभी वायुदाब की पेटियाँ दक्षिण की ओर खिसक जाती हैं। इनकी आदर्श स्थिति केवल 21 मार्च तथा 23 सितम्बर को होती है जबकि सूर्य भूमध्य रेखा पर लम्बवत् होता है।